॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

क्या आप
जातिविहीन समाज की स्थापना करना चाहते हैं?
अंध विश्वास को दूर करना चाहते हैं?
समाज को पाखण्ड से बचाना चाहते हैं?
आओ! चलें-चलाएं आर्यसमाज के साथ।

वर्ष ३२, अंक १७ एक प्रति : ३ रुपये
सोमवार ६ अप्रैल, २००९ से १२ अप्रैल, २००९ तक
विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८५
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com

राष्ट्रीय अखण्डता और चुनौतियां

– प्रकाश आर्य, महू

आज राष्ट्र को लेकर अनेक प्रकार की चिन्ताएं हो रही हैं। कोई भी सामान्य बुद्धि का व्यक्ति जो समाचार पत्र पढ़ता है, रेडियो अथवा दूरदर्शन पर समाचार देखता–सुनता है वह वर्तमान परिस्थितियों से अनभिज्ञ होगा ही नहीं। देश के नागरिक के लिए राष्ट्र की अनेकानेक समस्यायें, चिन्ता और निदान हेतु चिन्तन का विषय है।

आज राष्ट्र इन समस्याओं के कारण बहुत कठिनाई के दौर से गुजर रहा है। हालात निरन्तर बिगड़ते जा रहे हैं। राजनैतिक कद बढ़ाने के लिए राजनेता और वर्तमान राजनीति के कर्णधार भले ही जन सामान्य को गुमराह कर अपना प्रभाव जमाने का प्रयास करते रहे, देश को प्रगतिशील बताते रहे, किन्तु वास्तविकता तो यही है कि अन्दर से देश कमजोर हो रहा है। संगठन में दरारें बढ़ती जा रही हैं जो उसे खण्डित करने की ओर तेजी से बढ़ रही हैं।

जैसे किसी व्यक्ति को पहले एक बीमारी ने घेरा फिर कुछ बढ़ी और बढ़ी और फिर पूरे शरीर को अनेक बीमाारियों ने स्थायी रूप से जकड़ लिया। ऐसी स्थिति में व्यक्ति जीवित रहते हुए भी अक्षम है, बीमारियों से जूझना उसकी प्राथमिकता है, इस कारण वह उनके निदान व उनसे स्वयं की रक्षा के लिए ही पूरा समय, शक्ति और धन लगा रहा है।

वैसे ही देश में व्याप्त जानी–अनजानी अनेक समस्याओं ने राष्ट्र को बुरी तरह जकड़ लिया है। इन समस्याओं को सुलझाने में ही बहुत बड़ी शक्ति लग रही है। उपर–उपर समस्याओं का निदान कागजी खाना–पूर्ति जैसे हो भी जाता है परन्तु अन्दर ही अन्दर उसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

मोटे तौर पर राजनीति, भाषा, क्षेत्रीय समस्या, जातिवाद, पूंजीवाद, भाषावाद, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता का विष, पड़ोसी देश से निरन्तर विवाद, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्याप्त समस्यायें फिर दैविक प्रकोप, सूखा, बाढ़, भूकम्प, महामारी, राजनेताओं की, छोटे बड़े प्रशासनिक अधिकारियों की शोषण वृत्ति, अपार धन गलत रूप से एकत्रित करने की हवस, न्याय व्यवस्था के प्रति जन सामान्य का डगमगाता विश्वास आदि ऐसे अनेक कारण हैं जिन्हें हम देखकर, सुनकर महसूस कर रहे हैं किन्तु अनेक षड़यन्त्र जो गोपनीय हैं। जिनकी जानकारी भी नहीं है, उनके संबंध में कुछ कहा नहीं जा सकता कि वे कितने व किस हद तक राष्ट्र के विरुद्ध घात लगाने में सक्रिय हैं, ऐसे हालातों को देखकर ही लिखा –

देश के हालात बताने लगेगें।
तो पत्थर भी आँसू बहाने लगेगें।।

इन हालातों से देश का संगठन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। देश का नागरिक भयभीत है, अशान्त है, एक–दूसरे के प्रति आशंकित है, आपसी दूरियां मतभेद से बढ़कर मनभेद में परिवर्तित हो रही हैं। इन सबका परिणाम देश की अखण्डता पर पड़ रहा है।

राष्ट्र का महत्व मात्र पृथ्वी के किसी भौगोलिक हिस्से का नाम नहीं है अपितु उसके नागरिकों से उसकी पहचान होती है। राष्ट्र को आप शरीर कह सकते हैं और उसके नागरिकों को आत्मा।

राष्ट्र का अर्थ समस्त देशवासियों के समूह की व्यापकता में समाविष्ट है इसलिए उसकी उन्नति, अवनति, व्यापकता अथवा संकीर्णता का पैमाना देश की जन सामान्य जनता होती है। हम विचार करें और यह ढूंढे कि हमारे देश की प्रगति संगठन की स्थिति में जन सामान्य की कितनी व किस रूप में भूमिका है।

यदि ईमानदारी से इस पर खोज की तो परिणाम आपको दु:खद स्थिति दर्शाएंगें। राष्ट्र की पहली कड़ी व्यक्ति होता है, फिर परिवार, समाज और राष्ट्र तथा मानव जीवन की व्यापकता का अन्तिम परिमान वैश्विक है।

प्हली पंक्ति आधार है जब आधार मजबूत हो तो ही उस पर एक सशक्त एवं भव्य इमारत का निर्माण किया जा सकता है। कमजोर नींव पर एक विशाल व सशक्त इमारत की कल्पना भले ही करते रहे पर वह बनेगी नहीं और यदि बना भी दी तो गिरकर बिखर जायेगी। इसी प्रकार आज हमारे राष्ट्र की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है, राष्ट्र रूपी इमारत की नींव यहां के नागरिक हैं जो कमजोर, स्वार्थ में लिप्त, राष्ट्रीय धर्म से दूर, अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्यों से बेखबर, राष्ट्र के खतरों की रोकथाम व सुरक्षा के नाम पर मात्र प्रदर्शन कर मीडिया के माध्यम से अपनी पहचान बनाने में लगे हैं।

– शेष पृष्ठ 3 पर

जम्मू चलो! जम्मू चलो!! जम्मू चलो!!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर के तत्त्वावधान में

विश्वशान्ति महायज्ञ एवं

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24 अप्रैल से 26 अप्रैल, 2009 स्थान: महाजन हॉल, शालामार, जम्मू (ज० क०)

दिल्ली से जाने वाले महानुभावों के लिए श्रीनगर–जम्मू भ्रमण की व्यवस्था

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें। पधारने वाले समस्त आर्यजनों के भोजन व आवास की व्यवस्था सभा की ओर से की जाएगी। दिल्ली से भाग लेने वाले आर्यजन ***'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड, नई दिल्ली –110001'*** पर सम्पर्क करें।

निवेदक : भारतभूषण गुप्ता (प्रधान), डॉ. रविकान्त गुप्ता (मन्त्री) – आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर

दर्शन व्याख्या - 5

नास्तिक दर्शन : बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन :– बौद्ध दर्शन का मूलाधार गौतम बुद्ध की मान्यताएं हैं। जिन दार्शनिक ग्रन्थों में गौतम बुद्ध के विचारों, सिद्धान्तों और मान्यताओं को स्वीकृति मिली है, उन्हें बौद्ध दर्शन के ग्रन्थ माना जाता है। इन ग्रन्थों में 'त्रिपिटक' ग्रन्थ – सुत्तापिटक, विनय पिटक और अभिधम्मपिटक तो हैं ही, 'धम्मपद', 'पाली जातकावली' आदि भी हैं। बौद्धदर्शन के ग्रन्थ मुख्यतः पाली भाषा में लिखे गए हैं।

'बौद्ध' शब्द को 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वादश समुल्लास में ऋषिवर दयानन्द ने इन शब्दों में व्याख्यायित किया है : 'बुद्धया निर्वर्त्तते सः बौद्धः' जो बुद्धि से सिद्ध हो अर्थात् जो–जो बात अपनी बुद्धि में आवे उस–उस को माने और जो–जो बुद्धि में न आवे उस–उस को नहीं मानें।" (सत्यार्थ प्रकाश, पृ. 292) वेद, ईश्वर की निन्दा, ईश्वर के अस्तित्व की अस्वीकृति, अन्य मतों से द्वेष, जगत् का रचयिता कोई नहीं इत्यादि–इत्यादि मान्यताएं चार्वाक्, जैन और बौद्ध दर्शनों में समान हैं; किन्तु जहां चार्वाक् दर्शन देह के नाश के साथ जीव के नाश को मानता है, किन्तु पुनर्जन्म और परलोक को स्वीकृति प्रदान नहीं करता तथा केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार करता है; वहां जैन–बौद्ध दर्शन प्रत्यक्ष–अनुमानादि चार प्रमाणों, अनादि जीव, पुनर्जन्म, परलोक एवं मुक्ति को भी स्वीकार करते हैं। (दृष्टव्य : सत्यार्थ प्रकाश, द्वादश समुल्लास, पृष्ठ 292) इसके बावजूद वेद के प्रमाण एवं ईश्वर के अस्तित्व को न मानने के कारण चार्वाक् एवं जैन दर्शन के समान बौद्ध दर्शन की गणना भी नास्तिक दर्शनों में ही की गई है। शून्यवादी बौद्ध अन्ततः नास्तिक ही हैं और ऋषिवर दयानन्द ने इनके मत की सम्यक् समालोचना 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वादश समुल्लास में की है। देव दयानन्द ने बौद्धों के चार प्रकार – माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक एवं वैभाषिक स्वीकार किए हैं तथा बौद्धों और जैनों को एक ही माना है, क्योंकि 'जिनको बौद्ध तीर्थंकर मानते हैं उन्हीं को जैन भी मानते हैं।' (स.प्र. द्वादश समुल्लास, पृ. 294) बौद्धधर्म या बौद्ध दर्शन कालान्तर में दो प्रमुख शाखाओं में विभक्त हो गया – हीनयान और महायान।

– क्रमशः

Question & Answer

Our good and bad Karmas

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q.: Is this possible to attain an attractive and beautiful body and face using Vedas. Some People are lucky to get that physical beauty which every eye searches in this world. So is this possible to achieve external beauty using Ved Mantras. If Yes, Please give me those mantras to achieve flawless and ageless beauty. **Monika**

Ans.: Physical charm is not everlasting and he who seeks in young age he always repents, weeps, and disturbed in old age. Better if we try to know ourself that is soul and god within soul. Or we try to gain divine qualities being human being which are evergreen.

Q.: I have heard lot about Karmas. Bad 'karmas' give us bad effect and good 'karmas' give good effect. In some holy speeches I have heard that we have to pay the penalty of our bad 'Karmas' in this present birth only. Then why in some other books its mentioned that whatever we do in out previous birth we get the result according to that. So is this the previous birth sins that we are getting bad times in this birth or out current birth sins? **Monika**

Ans.: Please refer to the article on Karma at the website. So Rigveda mantra 10/135/1-3 says that this birth is meant to face the result of previous lives' deeds and the deeds done here at present will be faced in the future births. This process will continue till a man attains salvation.

Q.: Which is the best time to do something? **Vinti**

Ans.: Every time is best, being made by God, but one must worship God first before starting any work, etc. Please refer to more answers on similar topics

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

वैदिकवाङ्मये विज्ञानतत्त्वानि

– डॉ० हरीश्वर दीक्षित

गत अंकेन क्रमेशु :–

प्रसिद्धं यद् यदा पुरापो जलानि विश्वमायन् प्राहुः कीदृशः आपः वृहती तथा गर्भ दधाना हिरण्यगर्भ लक्षणं दधाना अत एवाग्निं जनयन्ती अग्निरूपं हिरण्यगर्भः जनयन्त्यः उत्पादयिष्यन्त्यः, ततो गर्भात् देवनाम् असुः, प्राणरूपः आत्मा लिंगशरीररूपो हिरण्यगर्भः समवर्तत उद्पद्यत कस्मै प्रजापतिरूपाय देवाय हिरण्यगर्भाय हविषा विधेम इति। तेन जलेन हिरण्यगर्भः प्रजापतिः एव सर्वप्रथम उत्पन्नोऽभवत्। शतपथब्राह्मणेऽपि सलिलमेवाग्रेऽऽसीत् 'आपो ह वा इदमग्रे सलिलमेवास।' (शतपथ ब्रा0 11/1/6/1), 'अद्भिर्वा इदं सर्वमाप्तम्' (श.ब्रा. 1/1/1/14, 2/1/1/14, 4/5/7/7)। गर्भ जनयन्ती तस्मादापः सर्वप्रथमः हिरण्यगर्भः प्रजापतिः एव समुद्भूतः प्रथमशरीरी अभवत्। ऋग्वेदे प्राप्तोऽयं मन्त्रः –

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। (ऋग्वेद 10/121/1)

अत्र इदम् अवधेयं यत् गर्भ दधाना जनयन्तीरग्निं यद् आपो अस्मिन् ऋग्वेदे अस्ति तदेवापो भौतिकी लौकिकी शरीरे मातृकुक्षौ सैव हिरण्यगर्भस्वरूपः मांसपिण्डः गर्भः गर्भे वृहतीरपो मध्ये जीवितायामवस्थायां सञ्चरणशीलः विद्यते। चिकित्साविज्ञाने मातृकुक्षौ जलान्तर्गते तदेव गर्भः (ॅजमत इंह) इति नाम्ना आवरणे सञ्जीवितः संरक्षितः विद्यते। 'अग्निं जनयन्ती' इत्यस्मिन् गर्भसम्बन्धे उपलक्षणमात्रमेव। गभस्तु जलान्तरगते (न्द जरम ूजमत इंह) अपि उष्णमेव भवति यतो हि प्रसवकालेऽपि उष्णमेव आपः सर्वप्रथमं रुधिरसंयुक्तगर्भात् बहिर्निगच्छति तेन सहैव उष्णौ गर्भः सजीवः मांसपिण्डः बहिः आयाति। स एव गर्भः कथुमष्णम्? गर्भाधान – कालेऽपि पुरुषस्य यद्वीर्यः निर्गच्छति तदैवोष्णमेव भवति, इति वैज्ञानिकं सत्त्यं तत्त्वम् एतस्मादेवोक्तं गर्भं दधाना जनयन्ती अग्निरिति वैदिकवाङ्मये। अथ अतन्तरं यस्मिन् कस्मिन्नपि यज्ञस्य शुभकार्यस्य वा प्रथमे पवित्रीकरणं भवति आचमनीकरणं भवति अस्य किं वैज्ञानिकं रहस्यम्? शतपथ ब्राह्मणे अस्य वैज्ञानिकं रहस्योद्घाटनं कृतम् – 'व्रतमुपैष्यन्..... प्राङ्तिष्ठन्न्प उपंस्पृशति।

– क्रमशः

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष को वृहद समारोह के रूप में मनाया जाएगा

महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष को पूरे वर्ष मनाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण देश में अनेक आयोजन, बैठकें व प्रचार सामग्री से प्रचार हो रहा है। इसका समापन दीपावली के पश्चात् निर्वाण वर्ष समापन समारोह को एक राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाएगा। बैठक को आचार्य बलदेव, आनन्द कुमार आर्य, डॉ. राधाकृष्ण वर्मा, सुरेश चन्द्र अग्रवाल, ब्र. राजसिंह आर्य, विनय आर्य, धर्मपाल आर्य व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने बैठक को सम्बोधित किया।

गौरक्षा हेतु प्रदर्शन

हरियाणा राज्य गौ रक्षा समिति द्वारा आगामी 9 जुलाई , 2009 को भारत शासन को गौ हत्या को कठोरता से रोकने के सम्बन्ध में तथा गौ हरक्षा के विरोध में ज्ञापन दिया जाएगा। समिति के अध्यक्ष आचार्य बलदेव ने समस्त देश से आऐ आर्य प्रतिनिधियों से इस आन्दोलन में भाग लेने के लिए आग्रह किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक में सभा प्रधान कै. देवरत्न आर्य ने सभी उपस्थित सदस्यों को इसमें भाग लेने का निर्देश दिया। उपस्थित सभी महानुभावों ने इस हेतु सहमति प्रदान की।

सूरीराम में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन सूरीनाम में आयोजित किया जा रहा हैं

प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की श्रृंख्ला में भारत, शिकागो, मॉरीशस के पश्चात् **सूरीनाम में दिनांक 25, 26, 27, सितम्बर, 09** को इस सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने बताया कि सम्मेलन की विस्तृत रूपोखा व पूर्ण जानकारी मई मास तक आर्यसन्देश व अन्य पत्र–पत्रिकाओं तथा प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से आर्यजनों को प्राप्त हो जाएगी।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्रीय अखण्डता और ......

इन सभी कारणों से आज राष्ट्र खण्डित हो रहा है भले ही भौगोलिक टुकड़े नहीं हुए परन्तु अन्दर ही अन्दर सब खण्डित होता जा रहा है।

स्वहित चरम सीमा पर पहुंच गया है, कुछ ऐसे –

अमन चोर अमन बेच रहे हैं,
कफन चोर कफन बेच रहे हैं।
पर कुछ तो वतन ही बेच रहे हैं।

आज देश का नागरिक हिन्दू है, मुस्लिम है, इसाई है या अन्य मतावलम्बी है या उसकी पहचान मराठी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती के रूप में है, इससे ज्यादा देश को अभिशप्त करने वाली राजनीति के कारण वह पार्टी के आधार पर पहचान बता रहे हैं किन्तु कोई भारतीय बनकर अपनी पहचान नहीं बता रहा।

आस्तीन में सांप पल रहे हैं, धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता का जाल बिछाकर बहुत बड़े वर्ग को राष्ट्रियता से काट दिया है, आज नहीं तो कल बहुमत के आधार पर पृथक स्थान की मांग की जावेगी, यह प्रबल संभावित है। वैचारिक अखण्डता तो हो चुकी है मात्र उसका प्रदर्शन या खुली घोषणा व बगावत ही शेष है।

यह सब क्यों हो रहा है, इन सब समस्याओं और देश को खण्डित करने वाली चुनौतियों के मूल में आखिर है क्या?

इसका मूल है, अपने धर्म का त्याग।

योगीराज श्री कृष्ण ने कहा – **''स्वधर्मे निधनः श्रेयः''** अर्थात् – अपने धर्म का पालन करते हुए संसार त्यागना ही श्रेयस्कर है। यहां धर्म से तात्पर्य हिन्दू–मुस्लिम, ईसाई आदि मतों से नहीं। यहां धर्म का अर्थ मानवीय धर्म से है। मानवीय कर्त्तव्य ही मानवीय धर्म है, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के निर्वाह करने को कहते हैं। इन चारों के प्रति सदा सजग रहें, इनकी उन्नति व रक्षा का प्रयत्न करता रहे, वही व्यक्ति मानव धर्म की पूर्ति करता है।

आज राष्ट्र के प्रति कोई अपनी जवाबदारी नहीं समझ रहा, राष्ट्रीय कर्तव्यों की उपेक्षा हो रही है। इतना ही नहीं अपने स्वार्थ में राष्ट्र को किसी न किसी प्रकार क्षति भी पहुंचा रहे हैं।

राष्ट्र देश के नागरिकों का परिवार है जैसे किसी परिवार को संयुक्त, संगठित और उन्नत बनाने के लिए उसका प्रत्येक सदस्य प्रयत्नशील होता है। अपने–अपने कर्तव्यों को अपना धर्म समझकर पूर्ण करता है, वही परिवार खुशहाल, सम्पन्न और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है निर्भय होकर जीता है।

यदि कुछ सदस्य परिवार के नियमों का उल्लंघन करने लगें, परिवार के हितों के विरुद्ध सोंचे और कार्य करें तब? ऐसी स्थिति में परिवार विघटित, कमजोर, दबा हुआ होकर बिखर जावेगा। यही सब तो राष्ट्र के साथ हो रहा है।

राष्ट्र के नागरिक देश की व्यवस्था कुछ नेता और, कुछ अधिकारियों को सौंपकर निश्चिन्त हैं। राष्ट्रीयता का संबंध केवल दलगत राजनीति, चुनावी पार्टियों, पदों तक सीमित हो चुका है। इसलिए राष्ट्रीयता की व्यापकता से दूर अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्यों की अवहेलना करने वाले नागरिक इसका दुष्परिणाम भुगत रहे हैं।

राष्ट्र की स्थिति संतरे (नारंगी) के समान है जो उपर से भले ही एक दिखे परन्तु अन्दर अलग–अलग हैं। दुर्भाग्य से राजनीति में अनेक दुष्चरित्र वाले, शोषक, बाहुबल से आतंक फैलाने वाले एवं जातिवाद के विष से समाज व राष्ट्र को कमजोर करने वाले भी बहुतायत में घुस गए हैं। राजनीति को गन्दा कर दिया, उद्देश्य सेवा से हटकर शोषण बन गया, भले आदमी इसे अछूत मानकर दूरी बना रहे हैं।

यह सब चिन्ता और चिन्तन का महत्वपूर्ण विषय है। आज आवश्यकता है सोई हुई जमीर को फिर चैतन्य करने की, राष्ट्रीयता से सबको जोड़ने की, मजदूर किसान, उद्योगपति, नौकरीपेशा, सभी राष्ट्रीय परिवार के सदस्य हैं, सभी इसके लिए सोचें – विचारें और वेद के सन्देश को मानते हुए कह उठे –

''माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' यह भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र।

जब उद्योगपति, नौकरीपेशा वाला एक मजदूर, एक किसान और रक्षा में लगा जवान जब एक ही इस भूमि माता का अपने को पुत्र मानेंगे तो सारी समस्याओं का निदान हो जावेगा, देश पुनः खण्डित होने से बच जावेगा, जो क्षति हुई उसकी पूर्ति कर सकेगा।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के उन विचारों को समझना होगा जिसमें उन्हें स्वर्ग से भी अधिक गरिमा माता व मातृभूमि को देते हुए कहा – ***जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी।***

पर यह बड़े व्यापक पैमाने पर क्रान्ति के रूप में करना होगा। मात्र भाषण, कोरे प्रचार, झण्डे, डण्डे, बैनरों से नहीं आचरण इसका प्रमुख आधार हो, दिखावा मात्र न हो।

मात्र अपने अधिकारों के प्रति ही नहीं कर्त्तव्यों के प्रति भी सोचें।

तभी यह देश अखण्डित रह सकेगा, यह ध्रुव सत्य है।

– मन्त्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)

बोध कथा

जाल्पी मत बनो!

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक थे पति और पत्नी। नया विवाह हुआ। उन्होंने अलग रहने के लिए एक मकान किराए पर लिया। वह एक सेठ साहब का मकान था। नीचे के भाग में स्वयं सेठजी रहते थे, ऊपर के भाग में यह पति और पत्नी। अपने मकान को उन्होंने कुर्सियों और कौखें से सजाया; मेजों और बत्तियों से सजाया; परदों और कालीनों से सजाया। बहुत प्यार से रहते थे वे। एक दिन सेठ ने सुनाकि दोनों झगड़ा कर रहे हैं। पत्नी भी ऊंचे–ऊंचे बोल रही थी, पति भी। युद्ध छिड़ गया प्रतीत होता था। सेठ जी पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करते रहे कि झगड़ा समाप्त हो जाए, वह समाप्त नहीं हुआ। आवाज के तोपखाने पूरे वेग से चल रहे थे।

सेठ साहब घबराकर ऊपर गए; बोले – 'किस बात पर झगड़े जाते हो, तुम तो कभी झगड़ते नहीं थे? तुम्हारे जैसे अच्छे लोग तो मैंने देखे नहीं। फिर आज क्या हुआ?'

पति ने कहा – 'देखिए सेठजी! आप ही इसको कुछ बुद्धि दीजिए। मैं कहता हूं , हम लड़के को वकील बनाएंगे। आनन्द से रुपया कमाएगा। समय पर कचहरी जाएगा। समय पर वापस आएगा। यह मूर्खा कहती है कि इसे डॉक्टर बनाएंगे। अब बताइए, डॉक्टर का जीवन भी कोई जीवन है? दिन को शान्त न रात को विश्राम। डॉक्टर बनाना तो उससे शत्रुता करना होगा।'

सेठजी ने श्रीमती से पूछा तो वह बोली – 'मेरे तो भाग्य खोटे थे, जो इनके पल्ले पड़ी। इन्हे तो रुपयों के अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं; और फिर डॉक्टर क्या रुपया नहीं कमाते? रुपया भी कमाते हैं, दुनिया की सेवा भी करते हैं। वकील का जीवन क्या है हर समय झूठ, हर समय चिन्ता। मैं तो लड़के को डॉक्टर ही बनाऊंगी।'

सेठ साहब ने सोचते हुए कहा – "इसके लिए इतना झगड़ा करने की क्या आवश्यकता है? लड़के से पूछ तो लो! यदि वह डॉक्टर बनना चाहता है तो डॉक्टर बना दो, वकील बनना चाहता है तो कानून पढ़ा दो। आओ! मैं तुम्हारे लड़के को पत्र लिखता हूं, जो कुछ वह कहे, उसे तुम दोनों मान लेना।'

दोनों ने एक–साथ कहा –"परन्तु लड़का तो अभी पैदा ही नहीं हुआ।'

ऐसे लोगों को कहते हैं – जाल्पी। सूत न कपास, घर में लट्‌ठम–लट्‌ठा। ऐसे व्यक्तियों में श्रद्धा नहीं होती। श्रद्धा न हो तो ज्ञान नहीं होता। ज्ञान न हो तो मन को एकाग्रता नहीं मिलती। मन एकाग्र न हो तो ईश्वर नहीं मिलता।

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (29)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

वैधर्म्याच्च न स्वप्नादिवत्।।29।।

अर्थ – (वैधर्म्यात्) विपरीत धर्म वाला होने से (च) भी (न) नहीं है (स्वप्नादिवत्) स्वप्न आदि के समान।

भावार्थ – स्वप्न में प्रतीति की तरह जगत् की प्रतीति नहीं होती, क्योंकि इन दोनों स्थितियों में भिन्नता पाई जाती है। जाग्रत अवस्था में यानी जागते हुए जिन पदार्थों को हम देखते या अनुभव करते हैं, वे ही स्वप्नावस्था में दिखाई देते हैं। स्वप्नावस्था में देखे हुए पदार्थ वास्तविक नहीं होते, क्योंकि आंख खुलते ही उनका अभाव हो जाता है। जागते हुए दिखाई देने वाले पदार्थ इनसे विपरीत धर्मवाले होते हैं। स्वप्न में देखे पदार्थों से उनकी कोई समानता नहीं।

शिष्य की शंका है कि स्वप्नावस्था में शरीर के अन्दर नदी, जंगल, पहाड़, नगर, सड़क पर लोगों की भीड़ तथा स्वप्न लेने वाले व्यक्ति के स्वयं के विविध कार्य दिखाई देते हैं। शरीरधारी जब स्वप्न देखता है तब वह स्वयं अपने बिस्तर पर सोया चेष्टा रहित पड़ा रहता है। इस स्थिति से हर व्यक्ति परिचित है। यों शरीर के अन्दर नदी आदि का होना सम्भव नहीं है। कहां उनके न होते हुए भी उनकी प्रतीति होती है। इससे उनका मिथ्या होना निश्चित है। इस तरह जागते हुए जो व्यवहार होता है उसे भी मिथ्या या असत् मानना चाहिए।

सूत्रकार के विचार में ऐसा सोचना ठीक नहीं है। क्योंकि स्वप्नावस्था की प्रतीति और जाग्रत अवस्था की प्रतीति में स्पष्ट अन्तर है। स्वप्न में प्राप्त धन जगने पर नहीं रहता। स्वप्न की स्थिति न रहने पर स्वप्न की बातें भी नहीं रहतीं। स्वप्न में मित्रों और संबंधियों से मिलना, सामने रखा हुआ, स्वादिष्ट

– शेष पृष्ठ 6 पर

आर्यजनता की भारी मांग पर सभा द्वारा पुनः प्रकाशन

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में

केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

निर्वाण वर्ष की स्मृति घड़ियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष की स्मृति हेतु तैयार घड़ियां चार आकारों में तैयार कराई गई हैं। सुन्दर, आकर्षक डिजाइन एवं गोल्डन कलर में महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ तैयार ये घड़ियां मात्र 100/– में बड़े आकार में तथा 75/– रुपये में छोटी उपलब्ध हैं। इसके अलावा आर्यसमाजों के सत्संग हॉल में लगाने के लिए सुपर बड़ी घड़ी 300/– रुपये तथा टेबल घड़ी 50/– रुपये मात्र में उपलब्ध हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की संगीतमय प्रस्तुति

"गुरुदेव दयानन्द" ऑडियो सीडी

सुन्दर मधुर भजनों का मनभावन संकलन
केवल 20/- रुपये में

पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, दूरभाष : 011–23365959, टेलिफैक्स : 011–23343737, Email : aryasabha@yahoo.com; Web.: www.delhisabha.com

श्री वीरेश प्रताप चौधरी और श्री विश्वनाथ को 'निष्काम सेवी सम्मान'

आर्य अनाथालय संस्थाकुल के संचालक, दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता वीरेश प्रताप चौधरी को निःस्वार्थ समाज सेवा के लिए धर्मभवन में आयोजित एक सम्मान सामरोह में सम्मानित किया गया। कनार्टक के पूर्व राज्यपाल एवं भारत के पूर्व महालेखा नियन्त्रक श्री टी. एन. चतुर्वेदी ने प्रभावशाली समारो में श्री चौधरी तथा लाला दीवानचन्द ट्रस्ट के प्रधान, सुविख्यात प्रकाशक श्री विश्वनाथ सहित छी विभूतियों को 'निष्काम सेवी सम्मान' प्रदान किया। योग एवं प्राकृतिक विकित्सा अनुसंधान परिषद् के पूर्व निदेशक प्रणवानन्द ब्रह्मचारी ने सान्निध्य प्रदान किया और यशस्वी पत्रकार श्री बालेश्वर अग्रवाल ने अध्यक्षा की।

श्री टी.एन. चतुर्वेदी ने 'निष्काम सेवी सम्मान समिति' के इस कार्य को अभिनन्दनीय बताते हुए कहा कि सम्मान अर्पन से व्यक्ति के साथ उसे द्वारा किए गए कार्य का भी सम्मान होता है।

– सुरेन्द्र मोहन

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

कॉमिक्स पढ़िए और जीतिए

5,00,000 रु० तक के इनाम

पांच लाख रुपयों की पुरस्कारी योजना

आज ही मंगवाएं

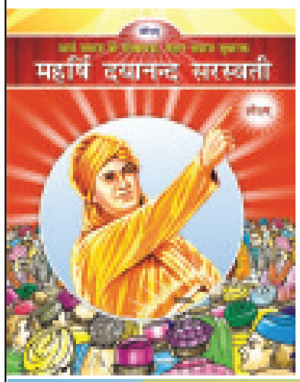

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने एवं परिवार के साथ जोड़ने के लिए तैयार कराई गई है कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई गई हैं। अन्य भाषाओं में भी इनका अनुवाद कराया जा रहा है। पढ़ने वाले समस्त बच्चों के लिए एक प्रश्न पत्र भी दिया गया है जिसके सही उत्तर देने वालों के लिए 5 लाख रुपये तक के विभिन्न पुरस्कार भी दिए जाएंगे। इनामों का विवरण तथा नियम कॉमिक्स में दिए गए हैं। मूल्य मात्र 12 रुपये प्रति कॉमिक्स। आज ही आर्डर करें। पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

पांच लाख रुपये की पुरस्कारी योजना

प्रथम पुरस्कार : (१) : दो लोगों के लिए मॉरीशस/मलेशिया/सिंगापुर (किसी एक स्थान की) आने-जाने की हवाई टिकटें तथा एक सप्ताह का टूर पैकेज अथवा १ लाख रुपये का चैक साथ में एम.डी.एच. का गिफ्ट हैम्पर।

द्वितीय पुरस्कार : (२) : भारत में किसी भी स्थान से किसी भी स्थान पर जाने-आने की दो लोगों की सीधी हवाई टिकटें तथा तीन दिनों का ५ स्टार कॉन्टिनेंटल होटल में ठहरने का व्यय

तृतीय पुरस्कार : (३) : भारत में किसी भी स्थान से किसी भी स्थान पर जाने-आने की दो लोगों के लिए सीधी हवाई टिकटें।

चतुर्थ पुरस्कार : (२०) प्रत्येक ५१००/- रु. (एक राज्य में एक) साथ में एम.डी.एच. का एक गिफ्ट हैम्पर।

पांचवा पुरस्कार : (५०) नकद धनराशि - प्रत्येक ३१००/- रुपये

छठा पुरस्कार : (१००) नकद धनराशि - प्रत्येक १०००/- रुपये

सातवां पुरस्कार : (५००) नकद धनराशि - प्रत्येक २५१/- रुपये नकद।

विशेष पुरस्कार : जिस विद्यालय से प्रथम पुरस्कार होगा, उस विद्यालय को विशेष पुरस्कार। जिस विद्यालय से सर्वाधिक बच्चे भाग लेंगे, उस विद्यालय के लिए विशेष पुरस्कार। जिस कक्षा से सबसे अधिक बच्चे भाग लेंगे, उस कक्षाध्यापक को पुरस्कार। पुरस्कार MDH लिमि. द्वारा प्रायोजित होंगे। विजेता अपने पुरस्कारों को दीपावली २००९ के पश्चात् तीन महीने तक प्राप्त कर सकेंगे।

प्रकाशक-विक्रेता : आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट,

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 में 5 किलो एवं 10 किलो के पैकेटों में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

डाक/ट्रांसपोर्ट से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

– संयोजक, विक्रय विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की उपसमिति आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में

अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद् दिल्ली अन्तर्गत दिल्ली की आर्यसमाजों में संचालित होने वाले विद्यालयों की अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन अप्रैल, 2009 में किया जा रहा है। समस्त विद्यालयों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने विद्यालयों से प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें। प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रतियोगिता संयोजकों से दिए गए नम्बरों पर सम्पक करें। आयोजित होने वाली प्रतियोगितओं, स्थान, समय तथा प्रतियोगिताओं के संयोजकों के विवरण इस प्रकार हैं :-

क्र. सं.	प्रतियोगिता	स्थान	दिनांक एवं समय	प्रधान	संयोजक/प्रधानाचार्य
1.	**भाषण प्रतियोगिता**	दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर	**25 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	श्री बलदेव राज आर्य (9312220135)	श्रीमती रेणुका कौल (9811357449)
	वर्ग -1 : कक्षा 6 से कक्षा 8 तक		**भाषण विषय :** "मोबाइल फोन विद्यालय में लाने की अनुमति दी जाए या नहीं"		
	वर्ग -2 : कक्षा 9 से कक्षा 12 तक		**भाषण विषय :** "इन्टरनेट के लाभ और हानियां"		
2.	**ग्रुप डिस्कशन**	बिरला आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, कमला नगर	**27 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	श्री योगेश आर्य (9811795045)	श्रीमती सुनीता खुराना (9868062481)
	वर्ग - कक्षा 8 से कक्षा 12 तक		**विषय :** "वर्तमान पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में समाप्त होता बचपन"		
3.	**समूह गान**	रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, बाबा खड़कसिंह मार्ग, कनाट प्लेस	**24 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	कर्नल आर. के. वर्मा (9818052955)	श्रीमती उषा मदान (25748875)
	वर्ग - कक्षा 6 से कक्षा 10 तक		**विषय :** महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित		
4.	**एकांकी प्रतियोगिता**	आर्य विद्या मन्दिर केशव पुरम, नई दिल्ली	**28 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	श्री मनवीरसिंह राणा (9350331718)	श्रीमती सरोज यादव (9250938820)
	वर्ग - कक्षा 5 से कक्षा 12 तक		**विषय :** महर्षि दयानन्द जी के जीवन के प्रेरक प्रसंगों पर आधारित		
5.	**नुक्कड़ नाटक**	दयानन्द मॉडल सै. स्कूल, बी ब्लाक, विवेक विहार, दिल्ली	**29 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	श्री बी. एन. भाटिया मैनेजर, 9818283777	श्रीमती आशा अस्थाना (22151150
	वर्ग - कक्षा 5 से कक्षा 12 तक		**विषय :** सब पढ़ें - सब बढ़ें		
6.	**वाद-विवाद प्रतियोगिता**	आर्य मॉडल स्कूल, आदर्श नगर, दिल्ली	**21 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	श्री अर्जुन देव सोनी	श्रीमती प्रोमिला सिंह (27673655, 27670755)
	वर्ग -1 : कक्षा 6 से कक्षा 8 तक		**विषय :** टी.वी. के विज्ञापनों पर अंकुश आवश्यक है।		
	वर्ग - 2 : कक्षा 9 से कक्षा 12 तक		**विषय :** कक्षा 8 तक बिना परीक्षा के पास करना उचित नहीं है		
7.	**चित्रकला प्रतियोगिता**	महर्षि दयानन्द आर्य पब्लिक स्कूल शादीखामपुर, पटेल नगर, न.दि.	**16 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	भगवान सिंह यादव	श्री कृपाल सिंह आर्य (मैनेजर) 931237900
	वर्ग - कक्षा 1 से कक्षा 5 तक		**विषय :** महर्षि दयानन्द जी के जीवन की कोई घटना		
8.	**काव्य पाठ प्रतियोगिता**	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, वाई ब्लाक, सरोजनी नगर, न. दि.	**17 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	श्री सुरेश गुप्ता (9212082892	
	वर्ग - कक्षा 5 से कक्षा 8 तक		**विषय :** देशभक्ति गीत		
9.	**मन्त्र लेखन प्रतियोगिता**	महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, न्यू मोती नगर, नई दिल्ली	**23 अप्रैल, 09** प्रात: 9.30 बजे	श्री सुरेश टंडन (9811982493)	श्रीमती श्रुति टंडन (65930559)
	वर्ग - कक्षा 6 से कक्षा 10 तक **विषय :** ईश्वर स्तुति प्राथना उपासना के 8 मन्त्र तथा गायत्री मन्त्र			श्रीमती इन्द्रा छाबड़ा, प्रधानाचार्य (9868992733)	
10.	**खेलकूल प्रतियोगिताएं**	सहदेव मल्होत्रा आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग (प.) नई दिल्ली	**30 अप्रैल, 2009** **1 मई, 2009** प्रात: 9.30 बजे	राजीव आर्य (921220904044)	श्रीमती उमा भारद्वाज (921227201
	गेम्स : बैडमिन्टन, टेबल टेनिस, खो-खो, वॉलीबॉल				
	ऐथलेटिक्स : 100 Mtr Race (Heat/Final), Obstacle Race (Heat/Final) , Long Jump, Shotput, Ball Throw, 4x100 Relay (Heat/Final)				

पुरस्कार वितरण समारोह 2 मई, 2009 को एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली में आयोजित होगा

-: निवेदक :-

ब्र. राजसिंह आर्य	विनय आर्य	सुरेन्द्र रैली	राजीव आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान	महामन्त्री	प्रस्तोता	अध्यक्ष	प्रबन्धक
(9350077858)	(9350204466)	(9810855696)	(921220904044)	(9212160210)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य विद्या परिषद् दिल्ली **एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026**

पृष्ठ 3 का शेष

पृष्ठ 3 का शेष

खाना आंख खुलते ही गायब हो जाते हैं। जागने पर पता चलता है कि वह तो स्वप्न था। विवेकशील व्यक्ति भ्रम और सच्चाई को जाग्रत अवस्था को अच्छी तरह समझता है। इसलिए स्वप्न को जाग्रत अवस्था में अच्छी तरह समझता है। इसलिए स्वप्न में देखे हुए काल्पनिक पदार्थों से विपरीत या भिन्न धर्म वाला होने से उन्हें अभावरूप नहीं कहा जा सकता। इसलिए यह मानना कि जगत और उसके पदार्थ सब अभव रूप हैं तर्क विरुद्ध और स्वीकार्य नहीं हैं। अर्थात् स्वप्न की दशा से जाग्रत अवस्था की तुलना करना और उसके आधार पर जगत् और जगत् के व्यवहार को मिथ्या या असत् कहना असंगत है।

स्वप्न स्मृति रूप होता है इसलिए यद्यपि अविद्यमान पदार्थ वहां दिखाई नहीं देते। इतने मात्र से उन पदार्थों को मिथ्या या असत् नहीं कहा जा सकता। वे जागते हुए हमेश सत्य रूप में प्रतीत होते हैं।

उनकी वास्तविक सत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता। कुछ भ्रम के स्थानों पर प्रतीति एवं विषय का मिथ्या या असत् होना उसी स्थिति में सम्भव है जब प्रतीति दूसरे रूप में हुई हो। सीप को चांदी समझना या रस्सी को सांप समझना ऐसा ही है। इसमें मिथ्यात्व या असत्व केवल इतना ही है कि एक वस्तु को दूसरी वस्तु समझ लिया गया। अपने स्प में न सीप मिथ्या है न चांदी और न रस्सी मिथ्या है न सांप। स्वप्न में अन्यथा प्रतीति यही है कि स्मृति को उपलब्धि या प्रतीति समझ लिया जाता है और

ब्रह्म सूत्र

पदार्थों के स्थान और स्थिति में उलटफेर हो जाता है। इससे पदार्थ मात्र को असत् मान लेना उचित नहीं है। सूत्र में 'स्वप्नादि' में 'आदि' पदका पयोग मायावी या जादूगरों द्वारा दिखाए गए पदार्थों के लिए किया गया है। इसलिए जगत् के सत् रूप होने पर एकमात्र ब्रह्म की सत्य सत्ता मान लेना पूर्ण रूप से अप्रामाणिक है।

– शिष्य प्रश्न करता है जगत् की अतिरिक्त सत्ता मानना निरर्थक है। एकमात्र ब्रह्म की ही सत्ता है। ब्रह्म स्वयं जगत् के रूप में भासता है। इसका मतलब यह है कि जगत् ब्रह्मरूप से अन्य कुछ भी नहीं है। ऐसा मानने पर जगत् को जगत् के रूप में सत्य कहना क्यों अपामाणिक नहीं?

सूत्रकार इसका समाधान अगले सूत्र में करते हैं।

– सी–2ए/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली–58

आर्यसमाज सै.10 ए गुड़गांव का
वार्षिकोत्सव एवं रामनवमी पर्व

आर्यसमाज सै.10 ए, गुड़गांव का वार्षिकोत्सव 3 से 5 अप्रैल तक उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर प्रतिदिन पं. राजवीर शास्त्री एवं सुश्री पुष्पा शास्त्री के भजन हुए। आर्यवीर दल गुड़गांवा के आर्यवीरों ने इस अवसर पर व्यायाम प्रदर्शन द्वारा आर्य महानुभावों को आकर्षिक किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री ओमप्राश आर्य ने किया।

– मन्त्री

वार्षिक परीक्षाओं में भाग लेने वाले समस्त विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी कक्षा से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 20%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों को नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ–साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली– 110001
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

खेद व्यक्त :– पाठकों की सूचनार्थ है कि किन्हीं अपरिवहार्य कारणों से साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक 30 मार्च से 5 अप्रैल, 2009 प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को होने वाली असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। – ***सम्पादक***

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्षय में 2 से 8 मार्च, 09 तक गुरुकुल की पवित्रयज्ञशाला में स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी आचार्य ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। वेद पाठ ब्र. सत्यदेव शास्त्री, ब्र. ऋषभ शास्त्री, ब्र. मनीष व केशव आर्य ने किया। दिनांक 6, 7, 8 मार्च का गुरुकुल का वार्षिक सम्मेलन आयोजित हुआ। इस अवसर पर म. आशाराम आर्य भजनोपदेशक, ओमव्रत आचार्य, स्वामी देवेश्वरानन्द, म. ब्रह्मदेव, श्री शान्तिप्रकाश आर्य, महीपाल आर्य ने उपस्थित आर्यजनों के समक्ष अपने विचारों को व्यक्त किया।

– आचार्य गुरुकुल

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली का ऋषि बोधोत्सव एवं वार्षिक उत्सव दिनांक 19 मार्च से 29 मार्च तक सम्पन्न हुआ। 19 से 22 मार्च तक प्रातः 5.30 से 6.45 बजे तक कीर्ति नगर की विभिन्न सड़कों व ब्लाकों में से प्रभु भजन गाते, जयकारे लगाते, कार्यक्रम की घोषणा करते हुए व आर्यवीरों द्वारा कार्यक्रम के पत्रक बांटते हुए 175 से 250 सदस्य व आर्यवीर शामिल हुआ। 22 मार्च की सायं को 6 बजे नवीनीकृत यज्ञशाला का यज्ञ द्वारा उद्घाटन हुआ। तदुपरान्त भजन संध्या में सभी स्थानीय आर्य परिवारों के साथ–साथ आर्यसमाजों के सदस्य भी शामिल हुआ। 23 से 28 मार्च तक प्रातः 6 से 8.15 बते तक यज्ञ प्रवचन के कार्यक्रम व उत्साह स्थानीय पूर्वक 54 यजमानों द्वारा इस पवित्र, वैदिक व धार्मिक कार्य में योगदान दिया गया। प्रतिदिन 90 से 110 धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं ने इसमें धर्मलाभ प्राप्त किया।

29 मार्च को पूर्णाहुति पर 13 यज्ञकुण्डों पर 57 यज्ञमानों तथा सप्ताह भर बने 54 यजमान कुल 111 यज्ञमानों ने बड़े धार्मिक श्रद्धापूर्वक व सहयोगपूर्वक यज्ञ की पूर्णाहुति की। आशीर्वाद व प्रसाद के उपरान्त पं. कुलदीप जी अपने साथियों सहित मध ुर भजनों द्वारा व डॉ ऋषिपाल शास्त्री, आचार्य सुभाष, डॉ. महेश विद्यालंकार तथा ब्रह्मा आचार्य ब्र. राजसिंह आर्य ने बड़े औजस्वीवैदिक विचारों की अमृतवर्षा का सभी सभी धर्मप्रेमियों ने जो कि भवन के ऊपरी तल पर स्थानाभाव होने पर भी बड़े उत्साहपूर्वक आनन्द प्राप्त किया।

उत्सव को सफल बनाने में सभी सदस्यों, स्त्री आर्यसमाज के साथ–साथ प्रतिदिन व्यवस्था बनाने में सर्वश्री ओमप्रकाश आर्य, विश्वनाथ भसीन, सुरेन्द्र बुद्धिराजा, राजेन्द्र पाल आर्य, जगदीश मनचन्दा, सुरेश तेजी, देवराज तनेजा, विनीत बहल, जितेन्द्र ठक्कर, प्रवीण आर्य व आर्यवीरों द्वारा पनी निस्वार्थ व निष्काम सेवाओं सेवओं में कोई कमी नही होने दी।

– ओमप्रकाश आर्य, प्रधान
सतीश चड्ढा, मन्त्री

आचार्य कुंजदेव पीएचडी की उपाधि से सम्मानित

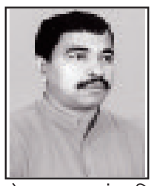

गुरुकुल आश्रम आमसेना आर्यसमाज के प्रमुख गुरुकुलों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इस गुरुकुल के सैकड़ो सुयोग्य स्नातक निकलकर शिक्षा एवं सेवा कार्यों में जुटे हैं। उन स्नातकों में आचार्य कुंजदेव मनीषी जी गुरुकुल के उपाचार्य के पद पर कार्यरत हैं। गुरुकुल में पढ़ते–पढत्राते हुए अपने स्वाध्याय के बल पर पं. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर से 'बाल्मीकीय रामायण में आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन' विषय पर मौलिक शोध प्रबन्ध प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्र संस्कृत विद्वान एवं साइंस कॉलेज दुर्ग से संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. श्री महेशचन्द्र शर्मा के कुशल मार्गदश्चन में प्रस्तुत करके पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

– कोमल कुमार आर्य, गुरुकुल आमसेना

प्रधानाचार्य की आवश्यकता

आर्य समाज नवाबगंज बरेली (उ.प्र.) द्वारा संचालित स्वामी दयानन्द बाल शिक्षा निकेतन के लिए एक अनुभवी प्रधानाचार्य की आवश्यकता है। आवास की सुविधा निशुल्क आर्यसमाज में दी जाएगी। वेतनमान चार अंकों में। विशेष – आर्य परिवार, शास्त्री वैदिक रीति से संस्कार कराने में सक्षम व्यक्ति को वरीयता दी जाएगी।

– रामकिशोर आर्य, अध्यक्ष,
मो. 0942603265

धर्माचार्य/पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज तुगलका बाद गांव, नई दिल्ली–33 के लिए एक सुयोग्य धर्माचार्य/पुरोहित की आवश्यकता है। आर्य विचारों का पुरोहित, वानप्रस्थी/संन्यासी जो समस्त संस्कार कराने में दक्ष हों आवेदन करें। उचित मानदेय तथा निशुल्क आवास व्यवस्था आर्यसमाज की ओर दी जाएगी। सम्पर्क करें – *विनय आर्य,*
महामन्त्री, 9350204466

महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती समारोह सम्पन्न

"राष्ट्र शब्द का उल्लेख विश्व में सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है। वेद ज्ञान और विज्ञान के अक्षय भण्डार हैं। वेदों की अनुपम ज्ञान सम्पदा के कारण ही भारत के अतीत में विश्वगुरु होने का गौरव प्राप्त करने में समर्थ हुआ था। वेदों में वर्णित राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय स्वाभिमान का व्यापक एवं सारगर्भित वर्णन है। विश्व के तथा राष्ट्र के समक्ष जो अनेक चुनौतियां विद्यमान हैं, उनका समधान वैदिक दर्शन में निहित है।" ये विचार भारत के पूर्व निर्वाचन आयुक्त जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति ने वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम इब्राहिमपुर दिल्ली में दयानन्द संस्थान के तत्वावधान में महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती समारोह के अवसर पर, प्रमुख लेखक, चिन्तक साहित्यकार डॉ. श्यामसिंह शशि की अध्यक्षता में आयोजित स्वाभिमान सम्मेलन के उद्घाटन पर व्यक्त किए। – ***बनारसी सिंह, व. पत्रकार***

महाशय बेगराज को कार भेंट

आर्य भजनोपदेशक महाशय बेगराज आर्य का गरिमापूर्ण, भव्य राष्ट्रीय अभिनन्दन समारोह 30, जनवरी, 09 को पलवल में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महाशय बेगराज को एक बैगेनआर गाड़ी, शाल, प्रशस्तिपत्र भेंट किया गया तथा महाशय जी के कार्यों एवं उनके जीवन के संस्मरणों पर आधारित अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन किया गया। मंच पर उपस्थित अभिनन्दन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. योगानन्द शास्त्री (अध्यक्ष, विधान सभा दिल्ली), मुख्य वक्ता डॉ. रामप्रकाश (सांसद), आचार्य विजयपाल (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा) उपस्थित थे। पलवल की धरती पर बड़े आर्य नेताओं के आगमन का हजारों की संख्या में उपस्थित आर्यों ने करतल ध्वनि एवं जयघोष तथा फूल मालाओं से स्वागत किया।– ***हरिश्चन्द्र शास्त्री, संयोजक***

आर्यसमाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा, नई दिल्ली में
वेद प्रचार कार्यक्रम

9, 10, 11, 12 अप्रैल, 2009

यज्ञ : प्रातः 8 से 9 बजे
ब्रह्मा : पं. जयप्रकाश शास्त्री
प्रवचन : आचार्य डॉ. सूर्यनारायण जी
प्रवचन : प्रातः 9.00 से 9.45 बजे
भजन : प्रातः 9.45 से 10.30 बजे

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– ***चूनीलाल विज, प्रधान***
अमरनाथ गोगिया, मन्त्री

नि:शुल्क जांच एवं चिकित्सा शिविर सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय के संस्थापक अध्यक्ष स्व0 श्री छोटूसिंह आर्य की द्वितीय पुण्य तिथि पर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धमार्थ हॉस्पीटल में 22 फरवरी,09को नि:शुल्क जांच एवं चिकित्सा शिविर लगाया गया। शिविर का उद्घाटन यज्ञ द्वारा किया गया। इस शिविर में लगभग 200 मरीजों की जांच की गई तथा उन्हें नि:शुल्क दवाइयों का वितरण किया गया।

– ***प्रदीप आर्य***

आर्यसमाज वीर सावरकर नगर, जयपुर हाउस आगरा (उ.प्र.) का
वार्षिकोत्सव

11 से 12 अप्रैल, 2009

यज्ञ : प्रतिदिन 7 से 9 बजे
ब्रह्मा : डॉ. महावीर जी, वेदप्रकाश शास्त्री
भजन : पं. रघुनाथ वैदिक भूषण

– ***आनन्द कपूर, मन्त्री***

डॉ. अशोक आर्य सम्मानित

कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के संस्थापक तथा देश के सबसे अधिक प्रकाशित होने वाले मलयालम के दैलिक मातृभूमि के स्तम्भ सम्पादक डा. एम. राजेश ने एक विशाल समारोह में मण्डी डबवाली के डॉ. अशोक आर्य को उनकी केरल में वेद प्रचारार्थ दी जा रही निरन्तर व विशिष्ट सेवाओं के लिए शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान डॉ. राधाकृष्ण वर्मा तथा श्री हरिश्चन्द्र जी वैज्ञानिक हैदराबाद को भी उनकी केरल के प्रति सेवाओं के लिए शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु को वेदरत्न पुरस्कार

कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के संस्थापक तथा मातृभूमि के स्तम्भ सम्पादक डॉ. एम. आर. राजेश ने आर्यजगत् के मूर्धन्य विचारक व लेखक, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु को केरल में आर्यासमाज की गतिविधियों को स्थाई रूप से आरम्भ करने के लिए दी गई उनकी सेवाओं हेतु वेद रत्न पुरस्कार दिया गया। उनका स्वागत करते हुए डॉ. एम. आर. राजेश ने उन्हें शाल आढ़ाकर, सम्मान पत्र भेंट कर तथा स्मृति चिह्न तथा नकद राशि देकर समान किया।

आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल में
होली मिलन समारोह

आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल फरीदाबाद में होली का पर्व यज्ञ से प्रारमी कर तिलक तथा फूलों से होली मनाकर किया गया। यज्ञ मा0 तीरथ दास रहेजा के ब्रह्मत्व में हुआ। तत्पश्चात् विद्यालय के बच्चों ने संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समाज प्रधान श्री जय प्रकाश आर्य ने तथा मा. गोविन्द राम रहेजा ने होली के पर्व की वैदिक व्याख्या की। कार्यक्रम की अध्यक्षता सेठ लक्ष्मणदास ने की।

– ***मन्त्री***

विक्रमी सम्वत् 2066 के अवसर पर शोभायात्रा

दयानन्द आदर्श विद्यालय, आर्यसमाज तिलक नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2066 के अवसर पर एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। समस्त विद्यालय परिवार, निकटवर्ती आर्यसमाज, गणमान्य व्यक्ति, धार्मिक सामाजिक महासंघ भारत विकास परिषद्, मार्केट अधिकारियों एवं माताओं ने इसमें भाग लेकर यात्रा को सफल बनाया। बच्चे तख्तियां लेकर केसरी पगड़ियां पहने नववर्ष की मंगल कामना एवं भारतीय संस्कृति के आधार नव सम्वत् एवं आर्यसमाज स्थापना की बधाई दे रहे थे। – ***बलदेव राज आर्य, अध्यक्ष***

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव एवं महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल पोषक स्व. स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की स्मृति में उज्जैन के निकट हासामपुरा में स्थापित आर्ष गुरुकुल में 19 फरवरी से 22 फरवरी, 09 तक प्रथम वार्षिकोत्सव तथा महर्षि दयानन्द जन्मदिवस समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन हुआ तथा आर्यसमाज उज्जैन के पूर्व प्रधान श्री ओमप्रकाश अग्रवाल की अध्यक्षता में दयानन्द जन्मोत्सव मनाया गया। हासामपुरा गुरुकुल के इस कार्यक्रम से महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज का सन्देश दूर–दूर तक प्रसारित हुआ तथा आसपास के नागरिकों में गुरुकुल के प्रति आकर्षण पैदा हुआ।

– ***स्वामी सत्यबन्धु सरस्वती, महामन्त्री***

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली
57वां वार्षिकोत्सव

आर्ययसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली का 57वां वार्षिकोत्सव आगामी 13 अप्रैल, 2009से 19 अप्रैल, 2009 तक सोत्साह मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वृहद् यजुर्वेदीय यज्ञ, आर्य महासम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, बाल सम्मेलन आदि विविध आकर्षक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। अन्तिम दिवस 19 अप्रैल, 2009 को आर्य महासम्मेलन प्रातः 10.15 बजे से 12.30 बजे तक अनेक आर्य विद्वान् तथा आर्यनेता उपस्थित होंगे। इस सम्मेलन की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी करेंगे।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– ***नरेन्द्र मोहन वलेचा, मन्त्री***

पुरोहित/धर्माचार्य चाहिए

दिल्ली में नव निर्मित आर्यसमाज हेतु वैदिक मान्यताओं से ओत–प्रोत सैद्धान्तिक आर्य, आकर्षक एवं मिलनसार व्यक्तित्व, संस्कृत, हिन्दी का विद्वान, कर्मकाण्ड में दक्ष, कुशल वक्ता, आयु अधिकतम 40 वर्ष। अंग्रेजी तथा कम्प्यूटर के ज्ञान वालों को प्राथमिकता, अन्यथा चुने जाने पर समय सीमा में सीखना आवश्यक। परिवार सहित रहने के सथान सहित मान–सम्मान के साथ योग्यतानुसार मासिक दक्षिणा। इच्छुक वर्तमान पासपोर्ट साईज फोटो तथा संदर्भ लिए एक प्रतिष्ठित आर्य के नाम पते, फोन नं. के साथ अपना विस्तृत हस्तलिखित विवरण निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें। लिफाफे के ऊपर 'आर्यसमाज के पुरोहित हेतु आवेदन' अवश्य अंकित करें। – ***एस. के गुलाटी***
सी–521, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली–110024

कु0 श्वेता देशभर में प्रथम

राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा परिषद् मण्डी डबवाली हरियाणा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अशोक आर्य ने इस वर्ष सम्पन्न हुई वैदिक परिक्षाओं के परिणामों की घोषणा करते हुए बताया कि 50अंकों में से 49 अंक लेकर कु. श्वेता तिवारी सुपुत्री श्री रत्नप्रकाश इन्द्रमोहन आर्य, किले धारूर, जिला बीड मराहाष्ट्र भारत में प्रथम रहीं हैं उसे 11 सौ रुपेय मूल्य के पुरस्कारों से सम्नानित किया

शोक समाचार
श्री रामस्वरूप आर्य का निधन

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर, हापुड़ के पूर्व प्रबन्धक श्री रामस्वरूप आर्य का पिछले दिनों निधन हो गया। वे गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल नरेला, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, गुरुकुल महाविद्यालय पूठ एवं गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन आदि अनेक संस्थाओं में प्रतिष्ठित पदों पर रहकर सेवा कार्य करते रहे।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं शोक सभा गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर में स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें अनेक आर्यमहानुभावों ने पहुंचकर श्री आर्य जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

6 अप्रैल, 2009 से 12 अप्रैल, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ०९/१०-०४-२००९

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००६-०८

आर. एन. नं. ३२३८७/७७

आर्यसमाज महरौली द्वारा शहीदी दिवस पर शोभा यात्रा सम्पन्न

आर्यसमाज महरौली, नई दिल्ली की ओर से दिनोक 23 मार्च, 2009 को शहीद भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव की याद में एक शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें बड़े और बच्चों ने भारी संख्या में भाग लिया। वन्दे मातरम्, देश के लिए बलिदान होने वाले सपूतों की जय हो, जैसे नारे लगतो हुए यह शोभायात्रा सायं 4 बजे सम्सी तालाब जहाज महल से मैन बाजार होती हुई आर्यसमाज महरौली दयानन्द चौक तक आई इसके बाद आर्यसमाज महरौली में श्रद्धांजलि सभा कर महर्षि दयानन्द सरस्वती, शहीद भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

– विजय सब्बरवाल (प्रधान) एस. पी. सिंह (मन्त्री)

प्रतिष्ठा में,

श्री..

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली का 38वां वार्षिकोत्सव

20 अप्रैल, 2009 से 25 अप्रैल, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.30–8 बजे ब्रह्मा : आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार

भजन : पं. सत्यपाल पथिक प्रवचन : पं. रामकिशांर शास्त्री

पूर्णाहुति एवं समापन : 26 अप्रैल, 2009 रविवार

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ लें।

– उषा किरण (प्रधान) कृष्णलाल किनरा (मन्त्री)

125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में आर्यसमाज अम्बिका विहार का वार्षिकोत्सव पर सत्यार्थ प्रकाश प्रवचनमाला सम्पन्न

आर्यसमाज अम्बिका विहार एवं वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के प्रयास से 20–21 मार्च को सायं एवं 22 मार्च को प्रातः 9.00 से 12.30 बजे तक यज्ञ, भजन, एवं सत्यार्थ प्रकाश प्रवचनमाला का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ सुश्री सुलक्षणा एवं आचार्य मेहरचन्द सेतिया जी ने सम्पन्न कराया। आर्यसमाज अम्बिका विहार की ओर से इस अवसर पर क्षेत्रीय निमम पार्षद श्री नरेन्द्र बिन्दल का स्वागत करते हुए महर्षि दयानन्द जी का चित्र, सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्यसमाज की मान्यताएं पुस्तक भेंट की गई।

आर्यसमाज मंगोलपुरी, दिल्ली के नव निर्मित भवन का

उद्घाटन समारोह

रविवार 3 मई, 09 प्रातः 11 बजे

आर्यसमाज – ओ. 253, मंगोलपुरी

उद्घाटन : आचार्य बलदेव जी

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

–: निवेदक :–

ब्र. राजसिंह आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

गजनप्रकाश आर्य (प्रधान) दुर्गाप्रसाद कालरा (मन्त्री)

वेद प्रचार मंडल उ. पश्चिमी दिल्ली

रामभेहर आर्य	हरिओम आर्य	वेदपाल आर्य
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज मंगोल पुरी, दिल्ली

125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

आर्यवीर क्रिकेट प्रतियोगिता

11 अप्रैल, 09 प्रातः 7 बजे

मिण्टो रोड पार्क, डी.डी.यू मार्ग, न.दिल्ली

– वीरेन्द्र आर्य, संचालक सुन्दर आर्य, महामन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली–१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर